राजभोग-आरती

यशोमती-नन्दन, ब्रजवर नागर,
गोकुल-रञ्जन कान।
गोपी-पराणधन, मदन मनोहर,
कालीय-दमन-विधान॥

अमल हरिनाम अमिय-विलासा।
विपिन-पुरन्दर, नवीन नागरवर,
वंशीवदन सुवासा॥
ब्रज-जन-पालन, असुरकुल-नाशन,
नन्द-गोधन-रखवाला।
गोविन्द, माधव, नवनीत-तस्कर,
सुन्दर नन्दगोपाला॥
यामुन-तटचर, गोपी-वसनहर,
रास-रसिक कृपामय।
श्रीराधा-बल्लभ, वृन्दावन-नटवर,
भकतिविनोद आश्रय॥

श्रीनृसिंहदेवजी की आरती

नमस्ते नरसिंहाय प्रह्लादाह्लाद-दायिने।
हिरण्यकशिपोर्वक्षः शिलाटङ्क-नखालये॥
इतो नृसिंहः परतो नृसिंहो
यतो यतो यामि ततो नृसिंहः।
बहिर्नृसिंहो हृदये नृसिंहो
नृसिंहमादिं शरणं प्रपद्ये॥
तव करकमलवरे नखमद्भुतशृंगम्
दलितहिरण्यकशिपु-तनुभृङ्गम्।
केशव! धृत-नरहरिरूप! जय जगदीश! हरे॥